11

dkSvk vkSj J`xky

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने विभिन्न परिस्थितियों में संस्कृत भाषा में संप्रेषण करना तथा संवाद करना सीखा। इस पाठ में "कौआ तथा श्रृगाल" की कहानी के माध्यम से संस्कृत वाक्यों का निर्माण और प्रयोग करना सीखेंगे।

mÌs';

यह पाठ पढने के बाद आप सक्षम होंगे:

- मूल कहानी को समझ पाने में; और
- कहानी लेखन के लिए वाक्यों के निर्माण को समझने में।

dkvk vkj J'xky

11.1 ey dgkuh Hkkx 1

r'rh; d{kk

fVIi.kh

,dnk ,dfLeu ou ,d% dkd% vklhrA l% çfrfnue vkgkjkFk xPNfr LeA lo= xPNfr LeA cgqd"Vu vkgkje vku;fr LeA

,dnk vkgkje vkuhrokuA o{kL; mifj mifo"VokuA rL; eq[k ekl [k.M% vklhrA rfLeu ,o ekxs ,d% 'kxky% xPNu vklhrA l 'kxky% vkgkjkFke vUo"k.k dqoZu vklhrA

एक वन में एक कौआ रहता था। वह प्रतिदिन आहार के लिए जाता था। वह सभी जगह जाता था तथा बहुत मुश्किल से भोजन ला पाता था।

एक बार वह आहार लेकर आया। पेड़ के ऊपर बैठ गया। उसके मुख में एक मांसखण्ड था। उसी रास्ते से एक श्रृगाल जा रहा था। श्रृगाल भी भोजन की तलाश में था।

'kCnkFk

एकदा– एकबार

गच्छति स्म– जाता था

आनयति स्म– लाता था

आनीतवान्– लाया

उपरि– ऊपर

शृगालः– गीदड

गच्छन् आसीत्– जा रहा था

अन्वेषणम्– खोज

कुर्वन् आसीत्– कर रहा था

ikBxr iz'u& 11-1

1. नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर दीजिए–

   i. काकः कुत्र आसीत् ?

   ii. काकः कुत्र उपविष्टवान् ?

   iii. शृगालः कुत्र गच्छन् आसीत् ?

iv. शृगालः अन्वेषणं किमर्थं कुर्वन् आसीत् ?

v. आहारार्थं शृगालः किं कुर्वन् आसीत् ?

11.2 ey dgkuh% Hkkx 2

l% 'k`xky% dkd: –"VokuA dkdL; e[k ek l[k.Me vfi –"VokuA 'k`xky% lUrk"ke vuHkrokuA ijUr dFk rr ek l[k.M vge Lohdjkfe bfr fpfUrrokuA

r'rh; d{kk

fVIi.kh

dkvk vkj J'xky

,de mik; —rokuA o{kL; lehie vkxroku 'kxky%A dkd% 'kxky —"VokuA

dkd% i"VokUk] Hkk 'kxky fdeFke v= vkxroku bfrA 'kxky% mäokUk] vg njkr —"Voku Hkor% lkUn;eA vr% lehir% i';kfe bfr v= vkxrokuA

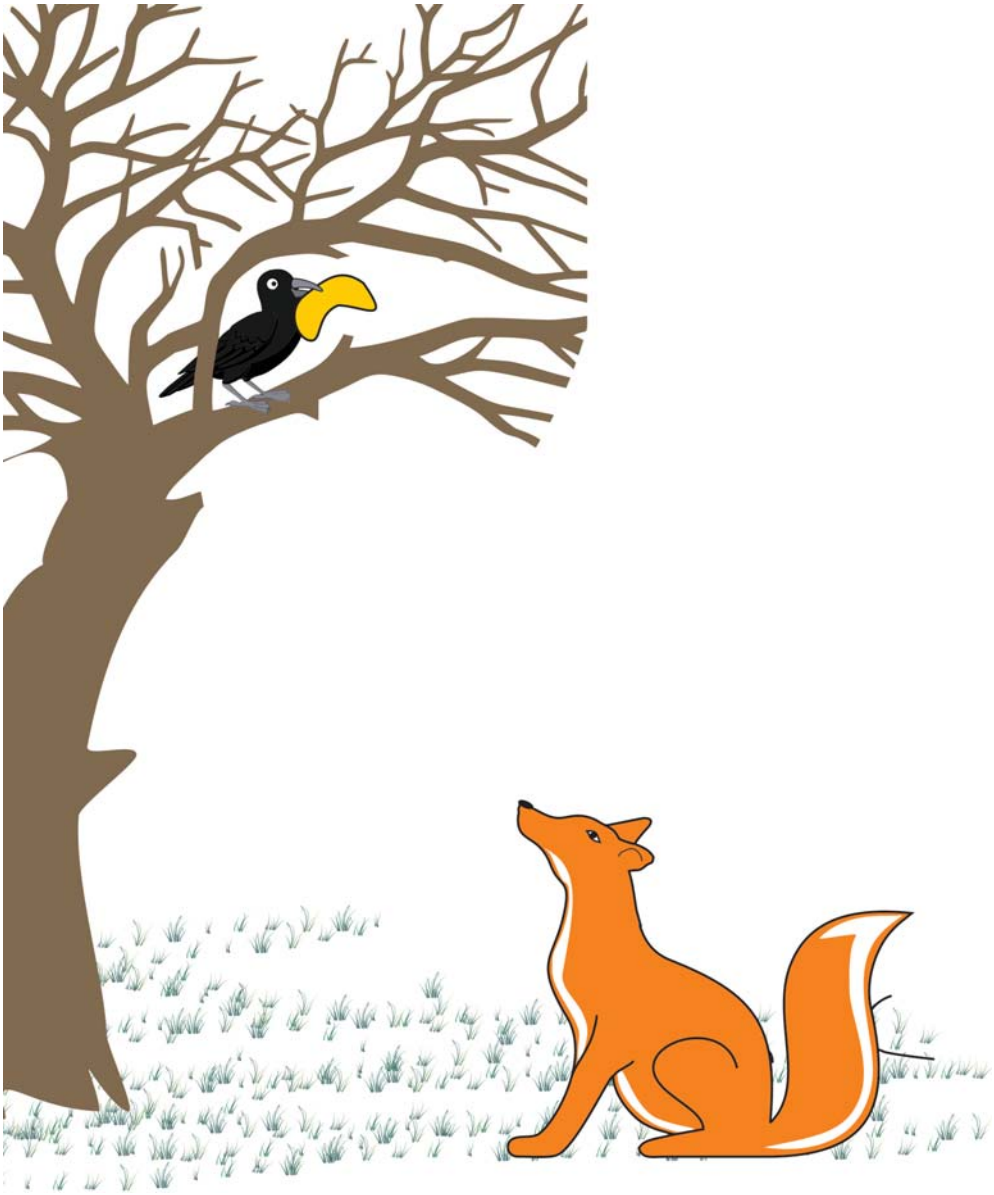

उस श्रृगाल ने कौवे को देखा। कोवें के मुँह में उसने मांसखण्ड देखा। श्रृगाल को संतोष की अनुभूति हुई। परंतु कैसे उस मांसखण्ड को प्राप्त करूँ, ऐसा सोचा कर चिंतित होने लगा।

fVIi.kh

उसने एक उपाय किया। श्रृगाल पेड के पास आ गया। कौवे ने श्रृगाल को देखा। कोवे ने श्रृगाल से पूंछा, यहाँ किसलिए आये हो? श्रृगाल ने कहा– मैने दूर से ही आपकी सुन्दरता को देखा। इसलिए समीप से देखने यहा चला आया।

ikBxr i'u& 11-2

1. नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर दीजिए–

   1. काकं कः दृष्टवान् ?
   2. शृगालः कं दृष्टवान् ?
   3. काकस्य मुखे किम् आसीत् ?

11.3 ey dgkuh% Hkkx 3

dkd% cg lUrk"ke vuHkrokuA 'kxky% mäoku Hkoku cg lUnj% vfLrA Hkor% /ofu% vfi lUnj% vfLrA

Hkoku ,d xku xk;fr ok\ rnk dkd% cg lUrk"ke vuHkrokuA lUrk"k.k e[ke mn?kkfVroku xk;ukFkeA

rnk e[k ;n vklhr ekl [k.M rr v/k% ifrrorA rnk 'kxky% rn ekl [k.M Loh—rokuA 'kxky% lUrk"k.k ekl [kknrokuA dkd% LoL; e[k;e KkrokuA

कौवे को संतोष की अनुभूति हुई। श्रृगाल ने कहा "आप बहुत सुन्दर हो"। आपकी आवाज भी अच्छी है।

क्या आप गाना गायेगे ? तब, काक को बहुत अधिक खुशी हुई। खुशी के मारे वह गाना गाने के लिए मुंख खोला।

तब उसके मुंह में जो मांसखण्ड था वह नीचे गिर गया। तब श्रृगाल मांस खण्ड को ले लिया। श्रृगाल ने सुंखपूर्वक मांसखण्ड को खाया। कौआ को अपनी मुर्खता का ज्ञान हुआ।

ikBxr i'u& 11-3

1. नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर दीजिए–

   i. शृगालः किम् उक्तवान्?

   ii. काकः किमर्थं मुखम् उद्घाटितवान्?

vkiu D;k lh[kk\

- नीतिः – जनाः बहु प्रशंसां कुर्वन्ति यदा तदा वयं विवेकं न त्यजामः इति चिन्तनम् ।

ikBkr i'u

i- काकः स्वस्य किं ज्ञातवान्?

ii- शृगालः किं चिन्तितवान्?

mÙkjekyk

11.1

1 i. एकस्मिन् वने

ii. वृक्षस्य उपरि

iii. मार्गे

iv. आहारार्थम्

v. अन्वेषणम्

11.2

1 i. शृगालः

ii. काकस्य मुखे मांसखण्डम्

iii. मांसखण्डम्

11.3

1 i. शृगालः उक्तवान् भवान् बहु सुन्दरः अस्ति।

ii. काकम् गायनार्थं मुखं उद्घाटितवान्।